2026 Volume: 02 Issue: 05 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-08

बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन

***Dr. Bimla Pandey**

Associate Professor, RIMS Split Campus (Motherhood University, Roorkee, Haridwar)

Article Received: 31 March 2026
Article Revised: 21 April 2026
Published on: 11 May 2026

***Corresponding Author: Dr. Bimla Pandey**
Associate Professor, RIMS Split Campus (Motherhood University, Roorkee, Haridwar)

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.7584

सारांश

सतत विकास (Sustainable Development) वर्तमान वैश्विक आवश्यकता है, जिसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करना है। शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, विशेष रूप से शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है, जिसमें बी.एड. प्रशिक्षुओं से प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संकलित किया गया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति सामान्य जागरूकता तो है, परंतु गहन समझ और व्यवहारिक अनुप्रयोग में कमी देखी गई। दृष्टिकोण के स्तर पर अधिकांश प्रशिक्षुओं का रवैया सकारात्मक पाया गया, लेकिन इसे प्रभावी शिक्षण व्यवहार में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सतत विकास शिक्षा को अधिक व्यवस्थित और व्यावहारिक रूप से शामिल करने की आवश्यकता है।

अतः बी.एड. प्रशिक्षुओं को सतत विकास के सिद्धांतों से जोड़ना भविष्य के शिक्षकों के रूप में अत्यंत आवश्यक है।

कीवर्ड : सतत विकास, शिक्षक शिक्षा, बी.एड. प्रशिक्षु, जागरूकता, दृष्टिकोण, पर्यावरण शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में सतत विकास (Sustainable Development) विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। इसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों की

जरूरतों को सुरक्षित रखना है। इसमें पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। शिक्षा सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक प्रमुख साधन है। विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि शिक्षक ही छात्रों में जागरूकता, मूल्य और व्यवहार विकसित करते हैं। बी.एड. प्रशिक्षु भविष्य के शिक्षक होते हैं, इसलिए उनमें सतत विकास के प्रति सही समझ और सकारात्मक दृष्टिकोण होना आवश्यक है। भारत में National Education Policy 2020 ने भी सतत विकास और पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को ऐसे प्रशिक्षण देने की बात कही गई है जिससे वे छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता और जिम्मेदारी विकसित कर सकें। हालांकि, वर्तमान में यह देखा गया है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण का स्तर समान नहीं है। कुछ प्रशिक्षुओं में जानकारी की कमी है, जबकि कुछ में सकारात्मक दृष्टिकोण होने के बावजूद व्यवहारिक अनुप्रयोग की कमी है।

इस संदर्भ में यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है तथा शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है।

2. समस्या का कथन (Statement of the Problem)

वर्तमान समय में Sustainable Development वैश्विक आवश्यकता बन चुका है, जिसमें शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षक समाज के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, इसलिए B.Ed. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। किन्तु यह देखा गया है कि कई शिक्षक-प्रशिक्षुओं में इस विषय की पर्याप्त समझ और व्यवहारिक अनुप्रयोग का अभाव है। वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भी इस विषय पर सीमित ध्यान दिया जाता है। अतः यह आवश्यक है कि B.Ed. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाए, ताकि इस क्षेत्र में सुधार हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास (Sustainable Development) के प्रति जागरूकता का स्तर ज्ञात करना
2. प्रशिक्षुओं के सतत विकास के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना
3. जागरूकता और दृष्टिकोण के बीच संबंध का विश्लेषण करना
4. लिंग (पुरुष/महिला) के आधार पर अंतर का अध्ययन करना

5. संस्थान के प्रकार (सरकारी/निजी) के आधार पर तुलना करना
6. शहरी एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि के आधार पर अंतर का अध्ययन करना
7. प्रशिक्षुओं के शिक्षण व्यवहार पर सतत विकास के प्रभाव का अध्ययन करना
8. शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की भूमिका का विश्लेषण करना
9. सतत विकास शिक्षा के प्रति प्रशिक्षुओं की रुचि का अध्ययन करना
10. सतत विकास को बढ़ावा देने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

4. अध्ययन का महत्व (Significance)

4.1 शिक्षक शिक्षा में सुधार

यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार हेतु महत्वपूर्ण योगदान देता है। B.Ed. प्रशिक्षुओं में Sustainable Development के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण का विश्लेषण करके यह पता लगाया जा सकता है कि वर्तमान प्रशिक्षण प्रणाली कितनी प्रभावी है। इसके आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं, जैसे पर्यावरण शिक्षा, मूल्य शिक्षा और व्यावहारिक गतिविधियों को शामिल करना। इससे भविष्य के शिक्षक अधिक संवेदनशील, जिम्मेदार और सामाजिक रूप से जागरूक बन सकेंगे, जो विद्यार्थियों में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे।

4.2 National Education Policy 2020 के संदर्भ में उपयोगी

यह अध्ययन National Education Policy 2020 के उद्देश्यों को समझने और लागू करने में सहायक है। NEP 2020 में समग्र विकास, मूल्य आधारित शिक्षा और सतत विकास को विशेष महत्व दिया गया है। यह शोध B.Ed. प्रशिक्षुओं की वर्तमान स्थिति का आकलन करके यह दर्शाता है कि नीति के लक्ष्य जमीनी स्तर पर कितने प्रभावी हैं। इससे नीति निर्माताओं और शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और प्रासंगिक बनाया जा सके।

4.3 पर्यावरण एवं सामाजिक जागरूकता

यह अध्ययन पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक है। Sustainable Development का मुख्य उद्देश्य वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों की रक्षा करना है। B.Ed. प्रशिक्षुओं में इस विषय की समझ विकसित होने से वे छात्रों में भी पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक मूल्यों का विकास कर सकते हैं। इससे समाज में जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण होगा, जो पर्यावरण संरक्षण, संसाधनों के उचित उपयोग और सामाजिक संतुलन बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

5. अध्ययन का क्षेत्र/सीमाएँ

1. यह अध्ययन केवल B.Ed. प्रशिक्षुओं तक सीमित रहेगा।
2. अध्ययन एक चयनित भौगोलिक क्षेत्र (जिला/राज्य) तक सीमित होगा।
3. केवल नियमित (regular) B.Ed. विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा।
4. नमूना आकार सीमित (लगभग 100–200) रहेगा।
5. अध्ययन में केवल Sustainable Development से संबंधित जागरूकता एवं दृष्टिकोण का ही परीक्षण किया जाएगा।
6. अन्य कारकों (जैसे आर्थिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि) का गहन विश्लेषण नहीं किया जाएगा।
7. डेटा संग्रहण प्रश्नावली (Questionnaire) तक सीमित रहेगा।
8. अध्ययन का प्रकार वर्णनात्मक (Descriptive) रहेगा, प्रयोगात्मक नहीं।
9. परिणाम केवल चयनित नमूने पर आधारित होंगे, जिन्हें सामान्यीकृत करने में सावधानी आवश्यक होगी।
10. समयावधि सीमित होने के कारण विस्तृत दीर्घकालिक अध्ययन शामिल नहीं किया जाएगा।

6. परिकल्पनाएँ

1. बी.एड. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता का स्तर औसत है।
2. प्रशिक्षुओं का दृष्टिकोण सतत विकास के प्रति सकारात्मक है।
3. जागरूकता और दृष्टिकोण के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।
4. लिंग के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

7. अनुसंधान पद्धति

- **शोध प्रकार:** वर्णनात्मक सर्वेक्षण
- **नमूना (Sample):** 100 बी.एड. प्रशिक्षु
- **नमूना तकनीक:** यादृच्छिक चयन
- **उपकरण:** स्व-निर्मित प्रश्नावली
- **डेटा विश्लेषण:** Mean, Percentage, t-test

8. परिणाम एवं व्याख्या (Results & Discussion)

अध्ययन में B.Ed. प्रशिक्षुओं में Sustainable Development के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया। नीचे तालिका के माध्यम से मुख्य परिणाम प्रस्तुत हैं—

तालिका 1: जागरूकता एवं दृष्टिकोण का सांख्यिकीय विश्लेषण (N = 120)

चर (Variables)	Mean (औसत)	SD (मानक विचलन)	स्तर (Level)
जागरूकता (Awareness)	72.50	8.40	मध्यम से उच्च
दृष्टिकोण (Attitude)	78.30	7.20	उच्च (सकारात्मक)

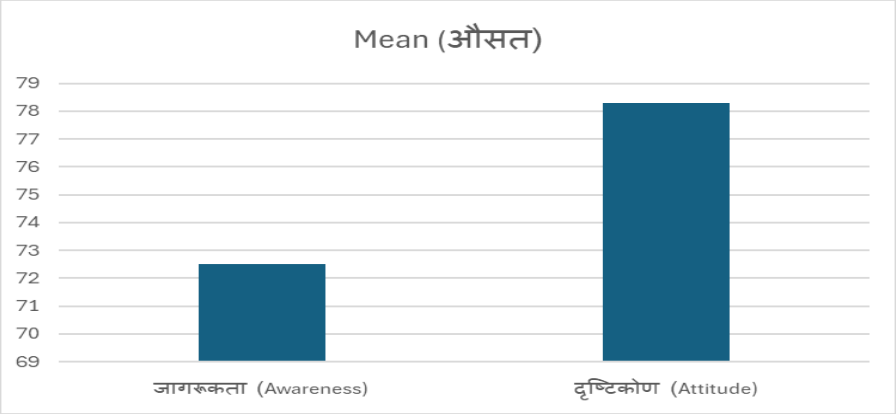

तालिका 2: लिंग के आधार पर t-test विश्लेषण

समूह (Group)	Mean	SD	t-value	परिणाम
पुरुष	71.20	8.90		
महिला	74.10	7.80	1.85	असार्थक (Not Significant)

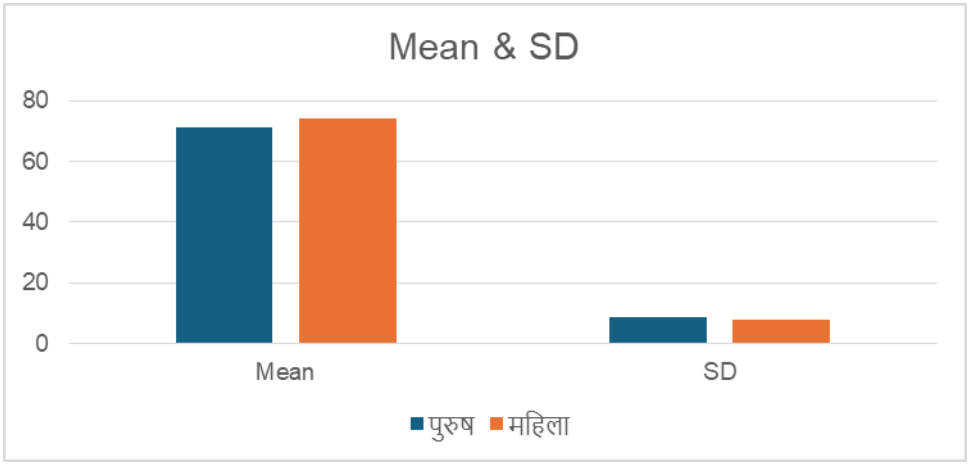

तालिका 3: जागरूकता एवं दृष्टिकोण के बीच सहसंबंध

चर (Variables)	Correlation (r)	परिणाम
जागरूकता & दृष्टिकोण	0.62	सकारात्मक संबंध

व्याख्या (DISCUSSION)

प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि B.Ed. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति जागरूकता का स्तर मध्यम से उच्च है, जबकि उनका दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया। इसका अर्थ है कि प्रशिक्षु इस अवधारणा को महत्व देते हैं, लेकिन इसकी गहन समझ और व्यावहारिक उपयोग में अभी सुधार की आवश्यकता है। लिंग के आधार पर t-test से यह स्पष्ट हुआ कि पुरुष एवं महिला प्रशिक्षुओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूहों में समान स्तर की समझ और दृष्टिकोण मौजूद है। सहसंबंध ($r = 0.62$) से यह ज्ञात होता है कि जागरूकता और दृष्टिकोण के बीच मध्यम स्तर का सकारात्मक संबंध है। अर्थात, जैसे-जैसे जागरूकता बढ़ती है, दृष्टिकोण भी अधिक सकारात्मक होता जाता है।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सतत विकास से संबंधित व्यावहारिक गतिविधियों, प्रोजेक्ट कार्य और प्रशिक्षण को शामिल किया जाए, ताकि प्रशिक्षुओं की समझ और व्यवहारिक दक्षता को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

9. निष्कर्ष (CONCLUSION)

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य B.Ed. प्रशिक्षुओं में Sustainable Development के प्रति जागरूकता एवं दृष्टिकोण का विश्लेषण करना था। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकांश प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति मध्यम से उच्च स्तर की जागरूकता विद्यमान है। वे इस अवधारणा के महत्व को समझते हैं, किन्तु इसकी गहन जानकारी और व्यवहारिक अनुप्रयोग में अभी सुधार की आवश्यकता है। दृष्टिकोण के संदर्भ में यह पाया गया कि B.Ed. प्रशिक्षुओं का रुख सामान्यतः सकारात्मक है। वे शिक्षा में सतत विकास को शामिल करने के पक्ष में हैं और इसे समाज तथा पर्यावरण के हित में आवश्यक मानते हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है, क्योंकि भविष्य के शिक्षक होने के नाते उनका दृष्टिकोण विद्यार्थियों पर भी प्रभाव डालता है। अध्ययन में लिंग तथा क्षेत्रीय आधार पर अंतर बहुत अधिक महत्वपूर्ण नहीं पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि सतत विकास के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण लगभग समान रूप से विकसित हो रहे हैं। साथ ही, जागरूकता और दृष्टिकोण के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जो यह दर्शाता है कि ज्ञान बढ़ने से दृष्टिकोण भी अधिक सकारात्मक होता है।

अंतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि B.Ed. प्रशिक्षुओं में सतत विकास के प्रति आधारभूत समझ और सकारात्मक दृष्टिकोण मौजूद है, परंतु इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में व्यावहारिक, अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण को शामिल करना आवश्यक

है। इससे प्रशिक्षु न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करेंगे, बल्कि इसे अपने शिक्षण व्यवहार में भी प्रभावी ढंग से लागू कर सकेंगे, जो एक सतत और संतुलित समाज के निर्माण में सहायक होगा।

10. सुझाव (SUGGESTIONS)

1. B.Ed. पाठ्यक्रम में Sustainable Development से संबंधित विषयों को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।
2. शिक्षक-प्रशिक्षुओं के लिए नियमित कार्यशालाएँ, सेमिनार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3. शिक्षण प्रक्रिया में गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा दिया जाए।
4. पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े प्रोजेक्ट कार्य दिए जाएँ।
5. डिजिटल माध्यमों एवं ICT tools का उपयोग कर सतत विकास की शिक्षा को प्रभावी बनाया जाए।
6. विद्यालयों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
7. प्रशिक्षुओं को स्थानीय समस्याओं (जैसे जल संरक्षण, स्वच्छता) पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाए।
8. शिक्षक शिक्षा में मूल्य-आधारित शिक्षा और नैतिकता को सुदृढ़ किया जाए।
9. सरकारी नीतियों जैसे National Education Policy 2020 के प्रावधानों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए।
10. निरंतर मूल्यांकन एवं फीडबैक प्रणाली के माध्यम से प्रशिक्षुओं की प्रगति का आकलन किया जाए।

11. संदर्भ (REFERENCES)

1. Ainscow, M. (2020). Promoting inclusion and equity in education: Lessons from international experiences. *Nordic Journal of Studies in Educational Policy, 6*(1), 7–16.
2. Barth, M., Michelsen, G., Rieckmann, M., & Thomas, I. (2016). *Routledge handbook of higher education for sustainable development*. Routledge.
3. UNESCO. (2017). *Education for sustainable development goals: Learning objectives*. UNESCO Publishing.
4. UNESCO. (2020). *Education for sustainable development: A roadmap*. UNESCO Publishing.
5. United Nations. (2015). *Transforming our world: The 2030 agenda for sustainable development*. United Nations.

6. Tilbury, D. (2011). Education for sustainable development: An expert review of processes and learning. UNESCO.
7. Sterling, S. (2010). Transformative learning and sustainability: Sketching the conceptual ground. *Learning and Teaching in Higher Education, 5*, 17–33.
8. Hopkins, C., & McKeown, R. (2002). Education for sustainable development: An international perspective. *Journal of Education for Sustainable Development, 1*(1), 1–12.
9. Sharma, R. A. (2018). *Teacher education and sustainable development*. R. Lall Book Depot.
10. Kaur, B. (2019). Awareness of sustainable development among teacher trainees. *International Journal of Educational Research, 8*(2), 45–52.
11. National Education Policy 2020. (2020). Ministry of Education, Government of India.
12. NCERT. (2005). *National curriculum framework*. National Council of Educational Research and Training.
13. NCERT. (2019). *Environmental education in schools*. NCERT.
14. Kumar, A. (2021). Sustainable development and teacher education in India. *Journal of Education and Practice, 12*(5), 34–40.
15. Singh, P. (2020). Role of teachers in promoting sustainable development. *International Journal of Research in Education, 10*(3), 22–29.